• कविता...

आई बिल्ली

जब से घर में आई बिल्ली
खा गई दूध-मलाई बिल्ली।
ताक लगाये बैठी रहती
बन गई चुश्त सिपाही बिल्ली।
बिल में चूहे दौड़ लगाते
भूख के मारे बैठ न पाते।
बाहर आने से अब डरते
दिनभर उपाय विचारा करते।
फिर भी घबराते रहते हैं
कर न दे कहीं खिंचाई बिल्ली।
हफ्ते भर में हिम्मत टूटी
बचने की उम्मीद भी छूटी।
सब बोले-'अब छोड़ो यह घर
दिल से नहीं हट पाता डर ।
कहीं भी गुजारा कर लेंगे'
सुन मन में मुस्काई बिल्ली।

■ रामेश्वर काम्बोह

आई नानी

ओ हो घर में आई नानी,
आज सुनेंगे खूब कहानी।
मुन्नी चुन्नी चम्पा भोला,
नहीं करेंगे अब शैतानी।
झोले में क्या लाई नानी
गुड्डा काना गुड़िया कानी।
कहां-कहां हो आई नानी
दिल्ली हरिद्वार हल्द्वानी।
नानी ऐसी सुना कहानी,
एक हो राजा एक हो रानी।
हंस हंस लोट पोट हो जाएं,
या आंखों में आये पानी।
एक कुंए में थोडा पानी,
उसमे नाचे लाल भवानी।
पहले बूझो यही पहेली,
फिर सुन लेना नई कहानी।

■ श्रीनाथ सिंह

• चुटकुला...

दिल्ली का ग्राहक : ऊंचा सुनने की मशीन कितने की है?
पंजाबी दुकानदार : '20 रूपए से 20 हजार रूपए तक।'
दिल्ली का ग्राहक : '20 रूपए वाली दिखाओ।'
पंजाबी दुकानदार : 'ये लीजिए, कान में लगाने का एक बटन और बटन से शर्ट की जेब तक एक वायर का टुकड़ा।'
दिल्ली का ग्राहक : ये काम कैसे करती है ?
पंजाबी दुकानदार : 'ये जी, कुछ भी काम नहीं करती... पर इसे लगा देखकर लोग आपसे जोर जोर से बोलते हैं तो मशीन की ज़रूरत नहीं पड़ती । हमारे लुधियाने में सबसे ज्यादा यही मशीन बिकती है।'

• जानकारी...

हवाई जहाज में लाल-पीली-हरी लाइट

जब भी आप किसी अंधेरी रात में आसमान की तरफ देखते हैं तो हवाई जहाज पर लगी छोटी-छोटी टिमटिमाती लाइटें सिर्फ सजावटी लग सकती हैं। लेकिन ये लाल, हरी और पीली लाइट

सजावटी नहीं होती बल्कि उनकी काफी अहम भूमिका है। इन लाइट्स को नेविगेशन या फिर पोजिशन लाइट्स के नाम से पहचाना जाता है. यह लाइट्स पायलट, हवाई यातायात नियंत्रक और यहां तक की बाकी विमानों को विमान की दिशा और गति पता लगाने में मदद करती हैं। आइए जानते हैं इस बारे में पूरी जानकारी।

क्यों है यह जरूरी-दुनिया का हर विमान एक सख्त और मानकीकृत प्रकाश व्यवस्था का पालन करता है। एफएए और आईसीएओ जैसे विमान प्राधिकरण इन रोशनी को जरूरी बनाते हैं, ताकि पायलट अंधेरे में दूरी, दिशा और गति का अंदाजा लगा सकें। अगर ये लाइट्स ना हों तो आसमान में विमानों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

लाल और हरी लाइटें पंखों पर क्यों लगाई जाती हैं-लाल लाइट हमेशा बाएं विंगटिप पर होती है, जबकि हरी लाइट दाएं विंगटिप पर। दरअसल यह विमान में ट्रैफिक सिग्नल दर्शाते हैं। लेकिन यह विमान के रुकने या आगे बढ़ने के संकेत नहीं देते, बल्कि दिशा बताते हैं। इन लाइट्स की मदद से हर व्यक्ति चाहे वह रनवे पर हो, नियंत्रण टावर में हो या फिर किसी दूसरी कॉकपिट में हो, एक नजर में ही आने-जाने वाले विमान की पहचान कर सकता है।

लाइटें दिशा पहचान में कैसे मदद करती हैं-यह नेविगेशन लाइट आकाश में कंपास की तरह काम करती हैं। अगर किसी को एक साथ लाल और हरी दोनों लाइट दिखाई दें इसका मतलब है कि विमान सीधे उनकी तरफ उड़ रहा है। अगर सिर्फ लाल लाइट दिखाई दे रही है तो विमान दाएं से बाएं की तरफ बढ़ रहा है। अगर सिर्फ हरा रंग दिखाई दे तो विमान बाएं से दाएं की तरफ जा रहा है। इसके अलावा एक चमकदार सफेद टेल लाइट होती है जो मौसम या फिर कोण के आधार पर पीली दिखने लगती है। विमान आमतौर पर सफेद स्ट्रोब लाइट का इस्तेमाल करते हैं। यह लाइट समय समय पर चमकती रहती है जिस अंधेरे आसमान में विमान को पहचानना आसान हो जाता है। विमान चाहे अमेरिकी हो, भारतीय हो या फिर ऑस्ट्रेलियाई हो प्रकाश व्यवस्था के नियम सभी के लिए एक जैसे रहते हैं। यह लाइटें टकराव को रोकती हैं, नेविगेशन में मदद करती हैं और साथ ही ग्राउंड स्टाफ को भी सतर्क करती हैं।

सोन मछली

गतांक से आगे...

पूरे-पूरे दिन मैं खिड़की में रखी मछली को ताकता रहता। अपने काँच के घर में वह तैरती रहती और कभी-कभी अपने पंखों से बालू को कुरेदती, जैसे सचमुच के समुद्र में हो।

मछली से मेरी बड़ी दोस्ती हो गई। मैंने एक नन्ही-सी झोंपड़ी बनाई और उसे काँच के बरतन में रख दिया। मछली तैरती हुई उसके दरवाजे से प्रवेश करती और खिड़की से निकल जाती। जिस तरह मेरे पिताजी ने सिखाया था, मैं काँच के बरतन पर उँगली से ठुक-ठुक करता और मछली पूँछ फैलाए तैरती चली आती। लगता, जैसे वह कोई बड़ी गुप्त बात बताने आई है।

एक दिन घर पर कोई नहीं था। मैंने बड़ी सावधानी से मछली को बरतन में से उठा लिया। वह ठंडी और चिकनी लग रही थी। वह मेरी मुट्ठी में फड़फड़ा रही थी और बार-बार मुँह खोल व बंद कर रही थी।

मैंने सोचा, वह कुछ कह रही है। मैं उसे अपने कान के पास ले गया। तभी लगा कि बुलबुले फूटने की-सी आवाज में वह कह रही है, ''जो चाहो माँग लो, तुम्हें वही मिल जाएगा।''

''ठीक है,'' कहते हुए मैंने मछली को फिर बरतन में छोड़ दिया। फिर पानी पाकर वह तेजी से इधर-उधर चक्कर लगाने लगी। मुझे पूरा यकीन था कि वह हमारी बातचीत पर खुशी जाहिर कर रही थी।

उस दिन शाम को पिताजी खाने की मेज पर बैठे चाय पी रहे थे और अखबार पर नजरें दौड़ा रहे थे। माँ घर पर नहीं थीं, किसी बीमार पड़ोसिन को देखने गई थीं। मैं मछली के बरतन के पास गया और काँच को उँगली से ठुकठुकाकर धीरे से बोला, ''सोन मछली, सोन मछली! मेरी माँ को सेंट की शीशी चाहिए। देखो, मेरी बात खाली न जाए।''

उसके बाद मैं सोने चला गया।

अगले दिन बर्फ गिर रही थी। पिताजी बर्फ से लथपथ घर आए और माँ ने बाहर के कमरे में उनका कोट उतरवाकर धीरे से झटका तो उसकी जेब से शीशी के खनकने की-सी आवाज आई।

जेब से छोटी-सी शीशी बाहर निकलते हुए देखकर उन्होंने अचरज के साथ पूछा, ''यह क्या है?''

पिताजी ने शर्मीली मुसकान के साथ कहा, ''क्रीमियाई गुलाब है, तुम्हारे लिए।''

''मेरे लिए?''

''हाँ, तुम्हारे लिए।''

''सच कह रहे हो? पहले क्यों नहीं बताया?''

''अब यह सब छोड़ो।'' पिताजी ने कुछ बुरा-सा मानते हुए कहा।

मानो अपने पिता के समर्थन में मैं भी बोल पड़ा, ''तुम्हारे लिए है, तुम्हारे लिए। और भी बहुत-सी चीजें आएँगी, देखती जाओ।''

माँ ने मेरी बात अनसुनी करके भौंहें सिकोड़कर पिताजी की ओर देखा, आनंद के भाव से हँसीं और वह शीशी अपनी श्रृंगार की मेज पर रख दी।

शाम को मछली के बरतन के पास से गुजरते हुए मैंने देखा, उसके साथ एक कागज लगा है। मैंने सोचा, जरूर मछली ने चिट्ठी भेजी है और चुपके से वह कागज ले लिया। पड़ोस की बीमार फेन्या चाची के पास मैं उस चिट्ठी को ले गया। उन्होंने पढ़कर सुनाया-

''अगड़म-बगड़म-बंबा बो! माँ का कहना मानो और काम में उसकी मदद करो।''

चिट्ठी लौटाते हुए फेन्या चाची ने पूछा, ''यह क्या मामला है?''

मैंने कहा, ''कुछ नहीं, यों ही।'' वे जादू के शब्द मैं दोहराना नहीं चाहता था कि कहीं वह उन्हें याद न कर लें।

घर पहुँचकर मैंने खाने की मेज साफ की और दो जूठी प्लेटें रसोई में रख आया। मैंने स्वयं अपना बिस्तर ठीक किया और पहली बार बिना माँ की मदद के हाथ-मुँह धोए।

-जारी

मछली से मेरी बड़ी दोस्ती हो गई। मैंने एक नन्ही-सी झोंपड़ी बनाई और उसे काँच के बरतन में रख दिया। मछली तैरती हुई उसके दरवाजे से प्रवेश करती और खिड़की से निकल जाती। जिस तरह मेरे पिताजी ने सिखाया था, मैं काँच के बरतन पर उँगली से ठुक-ठुक करता और मछली पूँछ फैलाए तैरती चली आती।

लगता, जैसे वह कोई बड़ी गुप्त बात बताने आई है। एक दिन घर पर कोई नहीं था। मैंने बड़ी सावधानी से मछली को बरतन में से उठा लिया...

• रोचक...

लाइफ एक्सपेक्टेंसी

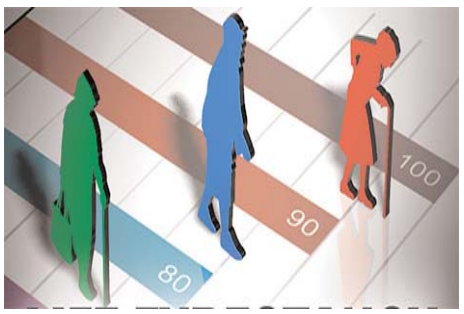

दुनिया भर में कुछ देशों में लाइफ एक्सपेक्टेंसी का चार्ट टॉप पर है। ये कुछ ऐसे देश हैं जहां पर लोग आमतौर पर 80 साल की उम्र तक और अक्सर उससे भी ज्यादा जीते हैं। 2025 तक हांगकांग, जापान, मोनाको और दक्षिण कोरिया दुनिया में सबसे आगे हैं। इन देशों में औसत लाइफ एक्सपेक्टेंसी ज्यादातर देशों से काफी ज्यादा है। हांगकांग 85.77 साल की औसत जीवन प्रत्याशा के साथ टॉप पर बना हुआ है। इसी के साथ जापान 85 साल, दक्षिण कोरिया 84.53 साल और मोनाको 86.5 से 87 साल की औसत जीवन प्रत्याशा को बनाए हुए हैं। उनकी लंबी उम्र के पीछे सबसे मजबूत वजह है आहार।

• अंगूर...

पूर्वी तिब्बत के जुओबा गांव में स्थित एक बेल ने हाल ही में दुनियाभर का ध्यान खींचा है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इस बेल को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित जंगली अंगूर की बेल के रूप में दर्ज किया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इसकी उम्र लगभग 416 साल है। यह बेल जोगांग काउंटी के पहाड़ी इलाके में अब भी हरी-भरी है और हर साल फल देती है। खास बात यह है कि यह जंगली प्रजाति की बेल है, यानी इसे इंसान ने नहीं लगाया बल्कि यह प्राकृतिक रूप से उगी और सदियों से जीवित है।